This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : 6137

Unique Paper Code : 205503 E

Name of the Paper : Hindi Nibandh Aur Anya Gadya Vidhayein

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

खण्ड 'क'

1. सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 7+8=15

(क) कवि स्वभाव से ही उच्छृंखल होते हैं। वे जिस तरफ झुक गए, झुक गए। जी में आया तो हिमालय की तरफ भी आँख उठाकर न देखा। यह उच्छृंखलता या उदासीनता सर्व-साधारण कवियों में तो देखी ही जाती है, आदिकवि तक इससे नहीं बचे। क्रौंच पक्षी के जोड़े में से एक पक्षी को निषाद द्वारा वध किया गया देख जिस कवि-शिरोमणि का हृदय दुख से विदीर्ण हो गया, और जिसके मुख से 'मा निषाद' इत्यादि सरस्वती सहसा निकल पड़ी, वही पर-दुखकातर मुनि, रामायण निर्माण करते समय, एक नव-परिणीता दुखिनी वधू को बिलकुल ही भूल गया।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

अथवा

कहा जा चुका है कि मनुष्य ज्यों ही समाज में प्रवेश करता है, उसके सुख और दु:ख का बहुत-सा अंश दूसरे की क्रिया या अवस्था पर अवलंबित हो जाता है। और उसके मनोविकारों के प्रवाह तथा जीवन के विस्तार के लिए अधिक क्षेत्र हो जाता है। वह दूसरों के दु:ख से दुखी और दूसरों के सुख से सुखी होने लगता है। अब देखना यह है कि दूसरों के दु:ख से दुखी होने का नियम जितना व्यापक है क्या उतना ही दूसरों के सुख से सुखी होने का भी। मैं समझता हूँ, नहीं। हम अज्ञात-कुल-शील मनुष्य के दु:ख को देखकर भी दुखी होते हैं।

(ख) प्रत्येक भाषा की प्रगति का एक क्रम होता है जो सूक्ष्म दृष्टि से देखा जा सकता है। भाषा केवल हमारे भावों तथा विचारों का वाहन नहीं है जो ठोक-पीटकर सर्व-समय काम में लाई जा सके। उसका एक स्वतंत्र व्यक्तित्व और वातावरण भी होता है। हमारी ही तरह उसकी भी शक्ति, इच्छा और संस्कार होते हैं। समय के परिवर्तनशाली पटल पर उसकी भी अनेक प्रकार की आकृतियाँ बनती रहती हैं। उन्हें पहचानना कविजनों के लिए उपयोगी ही नहीं, आवश्यक भी है। जो ब्रजभाषा भक्तों की भावनाओं से भरकर रीति कवियों की साज-सज्जा से चटकीली हो रही है, उसके साथ आलाप करना या तो किसी बड़े कलाभिज्ञ का ही काम है या किसी निपट अनाड़ी का ही।

Scanned with CamScanner

अथवा

नरक में पिछले सालों में बड़े गुणी कारीगर आ गए हैं। कई इमारतों के ठेकेदार हैं, जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारतें बनाईं। बड़े-बड़े इंजीनियर भी आ गए हैं, जिन्होंने ठेकेदारों से मिलकर पंचवर्षीय योजनाओं का पैसा खाया। ओवरसीयर हैं, जिन्होंने उन मजदूरों की हाजिरी भरकर पैसा हड़पा, जो कभी काम पर आए ही नहीं। इन्होंने बहुत जल्दी नरक में कई इमारतें तान दी हैं। वह समस्या तो हल हो गई, पर एक बड़ी विकट उलझन आ गई है। भोलाराम नाम के एक आदमी की पाँच दिन पहले मृत्यु हुई। उसके जीवन को यह दूत यहाँ ला रहा था कि जीव इसे रास्ते में चकमा देकर भाग गया। इसने सारा ब्रह्माण्ड छान डाला, पर वह कहीं नहीं मिला। अगर ऐसा होने लगा, तो पाप-पुण्य का भेद ही मिट जाएगा।

2. किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3×15=45

(क) 'ज़बान' निबंध की तात्त्विक समीक्षा कीजिए।

(ख) 'मजदूरी और प्रेम' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए।

(ग) 'कुटज' निबंध के केंद्रीय विचार का विश्लेषण कीजिए।

(घ) भक्तिन की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

(ङ) 'होना कुछ नहीं का' लेख में निहित व्यंग्य पर विचार कीजिए।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

खण्ड 'ख'

3. (क) डॉ. राजेंद्र प्रसाद की आत्मकथा के आधार पर स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान पर प्रकाश डालिए। 10

अथवा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी के प्रथम जेल-अनुभव का वर्णन कीजिए। उनके लिए जेल-अनुभव विचित्र क्यों था ?

(ख) ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपनी आत्मकथा का नाम 'जूठन' क्यों रखा ? 5

अथवा

'मधुशाला' के सम्बन्ध में बच्चन जी के क्या विचार थे ?

अथवा

'अपनी खबर' में 'उग्र' जी ने अपने जन्म और नामकरण के सम्बन्ध में क्या कहा है ?

Scanned with CamScanner